Name - Suraj Kumar

College name - Shakuntalam Institute of teacher Education

Sasaram Rohtas (Bihar)

Paper - C4 (B.Ed 1st year)

Date - 11/06/2020

NOTE- • कविता (पद्यांश, काव्य) तथा गद्यांश की शिक्षण विधियाँ अलग-2 होती है। 5.

• व्याख्यान विधि का प्रयोग पद्य-शिक्षण में प्रयोग अधिक होता है।

• और प्रश्नोत्तर विधि का अनुसरण या प्रयोग गद्यांश में अधिक किया जाता है।

• व्यास विधि का प्रयोग गद्य और पद्य दोनो में किया जाता है।

• गद्यांश का क्षेत्र बहुत ही विशाल है इसके अन्तर्गत नाटक, उपन्यास, आलोचना, निबन्ध तथा कहानी आदि सभी इसके अन्तर्गत आते है।

- गद्य-शिक्षण का क्षेत्र अधिक व्यापक तथा विशाल है। इसलिए गद्य-शिक्षण के उद्देश्य भी अनेक है। गद्य शिक्षण के सभी सामान्य तथा विशिष्ट उद्देश्यों को प्रमुख 6 भागों या उद्देश्यों में विभाजित किया गया है।

1. भाषा संबंधी ज्ञान की अभिवृद्धि करना तथा भाव व्यक्त करने की योग्यता विकास एवं नवीन शैलियों से अवगत कराना।
2. छात्रों में शब्द-भण्डार तथा सूक्ति-भण्डार की वृद्धि करना।
3. शुद्ध हिन्दी को हृदयगम करने तथा कठिन शब्दों के उच्चारण की क्षमता एवं कौशल का विकास करना।
4. बौद्धिक, तार्किक तथा मानसिक योग्यताओं का विकास करना।
5. आलोचनात्मक प्रवृत्ति को जाग्रत करना।
6. सुन्दर विचारें तथा भावों को विकसित करके चरित्र निर्माण में योगदान करना।

निष्कर्ष :-

"उपयुक्त विवेचना से यह निष्कर्ष निकलता है कि, पद्य में प्रभावित करने की, गद्य की अपेक्षा अधिक शक्ति है। पद्य हमारे हृदय को स्पर्श कर भावनाओं, को प्रभावित करती है, जबकि गद्य हमारे मस्तिष्क और बुद्धि को ही प्रभावित करती है। इसलिए कक्षा कक्ष में शिक्षक को पद्य और गद्य दोनो के माध्यम से दैनिक जीवन में विचारो का अदान-प्रदान करने का अवसर प्रदान करें, क्योंकि इससे बच्चो के अन्दर सृजनात्मकता, वर्णनात्मकता और भावनात्मकता का भाव विकसित होता है।"

Scanned with CamScanner

गद्य के विषय तथा गद्य संकलन की विधाएँ

गद्य के विषय एवं संकलन की विधाएँ दी गई है:-

गद्य के विषय	गद्य संकलन की विधाएँ
1. सभ्यता एवं संस्कृति सम्बन्धी प्रकरण	1. निबन्ध - वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावनात्मक तथा कथनात्मक
2. भौगोलिक एवं ऐतिहासिक	2. गद्य - काव्य
3. आत्मकथा एवं जीवनी	3. जीवनी
4. साहित्य स्वरूप, महत्व	4. हास्य - व्यंग्य
5. मनोभाव - उत्साह, क्रोध, श्रद्धा, भक्ति	5. यात्रा दर्शन
6. प्राकृतिक दृश्य, पर्व, तीर्थ आदि	6. संस्मरण
7. वैज्ञानिक अन्वेषण	7. आत्मकथा
8. शिक्षा उद्देश्य एवं स्वरूप	8. ललित निबन्ध
9. दर्शन - सत्य, अहिंसा, सर्वोदय जीवन और दर्शन।	9. समीक्षा।

गद्य शिक्षण के अंग

गद्य शिक्षण का प्रथम अंग वाचन है, जिसके अन्तर्गत आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन एवं मौन वाचन सम्पादित किए जाते हैं।
दूसरा अंग व्याख्या है, जोकि गद्य-शिक्षण के महत्वपूर्ण उद्देश्य को पूर्ण करने में सहायक है। इस अंग के अन्तर्गत शब्दार्थ व्याख्या एवं वाक्य-व्याख्या की जाती है। शब्दार्थ व्याख्या के लिए तीन विधियों का प्रयुक्त किया जाता है ① उद्बोधन विधि ② प्रवचन या कथानक विधि ③ व्याख्या विधि, या स्पष्टीकरण विधि।
तीसरा अंग विचार विश्लेषण है, जिसको प्रश्नोत्तर विधि के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।

गद्य शिक्षण के अंग

1. वाचन
   - आदर्श वाचन
   - अनुकरण वाचन
   - मौन वाचन
2. व्याख्या
   - शब्दार्थ व्याख्या → उद्बोधन विधि
   - पुनरावृत्ति प्रश्न → प्रवचन विधि या कथानक विधि
   - व्याख्या विधि या स्पष्टीकरण विधि
3. विचार विश्लेषण → विचार विश्लेषण
   - पुनरावृत्ति प्रश्न

Scanned with CamScanner

शब्दार्थ व्याख्या हेतु कुछ प्रमुख विधियाँ :-

① उद्बोधन विधि के सम्पादन में अनेक शिक्षण विधियाँ :—
- प्रत्यक्ष वस्तु प्रदर्शन करना।
- प्रत्यक्ष क्रिया द्वारा।
- प्रतिमान (मॉडल के प्रदर्शन द्वारा)।
- चित्र तथा रेखाचित्र द्वारा।
- वाक्य प्रयोग द्वारा।
- अन्तर्क्रिया द्वारा तथा।
- मानचित्र तथा चार्ट के प्रदर्शन द्वारा।

② प्रवचन विधि या कथानक विधि के सम्पादन के शिक्षण विधि :—
- पर्यायवाची शब्दों द्वारा।
- तुलना के द्वारा।
- विलोम शब्द द्वारा।
- अनुभव के द्वारा तथा।
- समानार्थी या समान शब्द रूप द्वारा।

③ व्याख्या विधि या स्पष्टीकरण विधि :— के शिक्षण विधि :—
- व्याख्या विधि।
- सन्धि-विच्छेद द्वारा।
- उपसर्ग द्वारा।
- प्रत्यय - ~~विच्छेद~~ द्वारा।
- अन्तर्क्रिया द्वारा।
- घटना विधि।
- प्रश्नों के द्वारा।
- समास विग्रह द्वारा।
- उद्धरण द्वारा।

Scanned with CamScanner